रविवार, दिनाँक **08-10-2023** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

हरदम राहवे ध्यान, बली जी तुहाडे चरणां दा।

मैं स्वास स्वास नाम ध्यावां, बली जी तुहाडे चरणां दा।।

उठत बैठत स्वप्न जाग्रत, हरि चरणां चित्त लाँवां।

बली जी तुहाडे चरणां दा, हरदम राहवे ध्यान।।

कार विहार जगत दे सारे, ओ करेसन रघुनाथ जी प्यारे।

उन्हां दा नाम ध्याईं, बली जी तुहाडे चरणां दा हरदम राहवे ध्यान।।

कुटम्ब कबीला बन्धु प्यारे, हैन भैणों मतलब दे सारे।

इन्हां विच प्रीति न लाई, बली जी तुहाडे चरणां दा हरदम राहवे ध्यान।।

विषय विकारां विच चित्त न लांवीं, इन्हां कोलों तू बच के राहवीं।

ए हैन नरक दा द्वार, बली जी तुहाडे चरणां दा हरदम राहवे ध्यान।।

सुतियां नू बली जी आन जगाओ, संसार सागर दे विचों बचाओ।

नरकां तों बच जान, बली जी तुहाडे चरणां दा हरदम राहवे ध्यान।।

जे नरकां तों बचना चाहवो, महाबीर जी दी शरणी आओ।

ओ डुबियां नू आन तरान, बली जी तुहाडे चरणां दा हरदम राहवे ध्यान।।

जो महाबीर जी दा नाम ध्यावे, उपरों इक विमान जो आवे।

ओदे ते चढ़ के जान, बली जी तुहाडे चरणां दा हरदम राहवे ध्यान।।

झूठी दुनियां नाल प्रीत न लावो, महाबीर जी दी शरणी आवो।

ओ सच्चे घर पहुंचान, बली जी तुहाडे चरणां दा हरदम राहवे ध्यान।।

दासियां दी तुसीं सुनो पुकार, तुहाडे नाल है सब दा प्यार।

सिया राम लषण नू मिलाई, बली जी तुहाडे चरणां दा हरदम राहवे ध्यान।।

दासी दी हुण सुनो पुकार, बेड़ा कर दियो सब दा पार।

रघुनाथ जी दी चरणी बिठाई, बली जी तुहाडे चरणां दा हरदम राहवे ध्यान।।

सभी सजनों से प्रार्थना है कि अपना यह मानव जीवन सफल बनाने हेतु बुद्धिमत्ता से प्रयासरत हों। इस प्रयास में सफल होने के लिए अब तो जो भी मानवता के विपरीत अविचारी भाव-स्वभाव अपनाए हैं, उन्हें सहर्ष त्याग दो ताकि आपकी अन्दरुनी और बैहरुनी दोनों वृत्तियाँ शान्त हो जाएँ और मन अफुर अवस्था में सधा रहे। इस भजन के माध्यम से भी सच्चेपातशाह जी सर्वहित को दृष्टिगत रखते हुए कलुकाल के भाव-स्वभाव में उलझे हुए और असत्य-अधर्म के कामनायुक्त मार्ग पर चलने वाले इन्सानों को सम्भलने व सम्भालने की युक्ति बताते हुए समझा रहे हैं कि हे इन्सानों, किसी विध् भी स्वार्थपर संसारी नातों के मोह-बन्धन में मत फँसना। यदि ऐसी गलती कर चुके हो या करोगे तो निश्चित ही परिणामस्वरूप में आपका नरकों में वास होगा और बहुत यातना सहनी पड़ेगी। ऐसा न हो इसलिए अपनी बुद्धि को पलटा खवाकर अपने ख़्याल को सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अनुसार हर पल नाम-ध्यान में स्थिर रखो और संसारी बातें सोचने के स्थान पर या संसार से कुछ प्राप्तकर संकल्प-विकल्प में उलझने के स्थान पर अपनी सुरत को सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों की पालना के प्रति समर्पित रखो। आपको ऐसा करने के लिए किसी पर निर्भर न होना पड़े इसीलिए सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ आपको प्रदान कर दिया है यानि कुदरत ने समुचित व्यवस्था की है। अब उस प्रबन्ध का लाभ उठाने हेतु व्यक्तिगत रूप से प्रयत्नशील तो स्वयं को ही होना होगा। वह फिर आगे कहते हैं कि अगर नरकों की यातना

से बचना चाहते हो तो इस ग्रन्थ में वर्णित युक्ति को वर्त वर्ताव में लाओ और अन्यों को भी जीवन सफल बनाने की युक्ति से परिचित कराओ। इस तरह अपने, अपने परिवार के व कुल समाज के सजन बन जाओ। जानो इससे बेहतर मानव चोले में अपना जीवन उद्धार करने का और कोई तरीका नहीं है। अतः युक्ति का वर्त-वर्ताव खुद करो और अन्यों से करवाओ। इस तरह सोये हुओं को जगाओ, गिरते हुओं को उठाओ और भटके हुओं को रास्ते पर ले आओ। कम से कम जिन बच्चों को जन्म उपरान्त खुद भटकाया है और उनके ख़्याल को संसार में फँसाया है, उनको तो कुरस्ते से सीधे रास्ते पर लाकर उनके सजन बन जाओ व नरको की यातना भुगतने से बच जाओ।

सजनों इस सन्दर्भ में सब गम्भीरता से विचार करो और आगे बढ़ चलो यानि रुको नहीं क्योंकि अब समय रुकने का नहीं है अपितु अपने सच्चे घर की ओर आगे बढ़ने का है। जानो सच्चे घर पहुँचने की यह सूक्ष्म युक्ति है। यदि इस युक्ति को प्रवान करने में आप सफल हो जाते हो तो आपकी सुरत/ख़्याल संसार में नहीं उलझ सकता क्योंकि वह तो अपने सच्चे घर में स्थित रहने के आभास में स्थिर बना रहेगा यानि निर्गुण में स्थित रहते हुए सर्गुण के खेल खेलेगा और इस तरह जगत से निर्लेप हो जाएगा। इस सन्दर्भ में सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि जो सजन ऐसा पुरुषार्थ दिखाने में सफल हो जाता है, उस सुरत पर परमेश्वर इतने प्रसन्न हो जाते हैं कि उस सुरत को सच्चे घर में स्थान देने के लिए ऊपर से एक विमान आता है और उस विमान पर सुरत शान्ति से चढ़कर जाती है। जब इतनी शान से कोई सुरत रानी अपने घर जाती है तो उसका यश तीनों लोकों में फैलता है क्योंकि वह इलाही विमान इतना निराला होता है कि कुल त्रिलोकी यह दृश्य देखकर हर्षा उठती है। सो आप सजनों का भी यही प्रयास हो कि आपकी सुरत शास्त्र-विहित युक्ति अनुसार कंचन अवस्था में सध जाए। जानो इसीलिए तो जिव्हा स्वतन्त्र, संकल्प स्वच्छ व दृष्टि कंचन रखने का कुदरती विधान है। इतना सा आत्म-नियन्त्रण रखने से आत्म-स्वरूप में शोभित जो परमात्मा है, हम उसका

साक्षात्कार करने में सफल हो सकते हैं। जब सफल हो जाते हैं तो हमारे हृदय व रोम-रोम, रग-रग में आत्मिकज्ञान प्रकाशित हो जाता है क्योंकि हम अपनी कंचन अन्तर्दृष्टि द्वारा अन्तर्निहित आत्मिकज्ञान पढ़ सकते हैं, समझ सकते हैं और सुचेती से दोनों वृत्तियों में वर्त-वर्ताव में ला सकते हैं। इस तरह हम निष्काम अवस्था में बने रहने में कामयाब हो जाते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि जहाँ निष्काम है, वहाँ मानसिक विश्राम है। इस प्रकार हमारा जीवन हर क्षण विश्राममय अवस्था में व्यतीत होता है और हम मान-अपमान में न फँसते हुए परोपकार कमाने में सफल हो जाते हैं। आशय यह है कि हमारे लिए 'सजन सदो, सजन सदाओ, सजन ही पहरेवा पावो' की परमार्थी युक्ति अनुसार अपने जीवन का हर कर्त्तव्य सफलता से व निर्लिप्तता से सहर्ष निभाना सहज हो जाता है। यहाँ जानो कि जहाँ स्वार्थ है वहाँ हम लिप्त हैं और इसके विपरीत जहाँ परमार्थ है वहाँ हम निर्लिप्त हैं क्योंकि तब हमारा जीवन परम अर्थ सिद्ध करने के प्रति समर्पित हो जाता है। अब हमें किसी चीज़ की आवश्यकता ही नहीं रहती यानि हम कामना मुक्त हो जाते हैं। काम-मुक्त हो गए तो क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार भी चले जाते हैं। इस तरह हम विषय-विकारों से मुक्त होकर निर्विकारी हो जाते हैं।

सजनों आपके जीवन का अन्त परिणाम भी अच्छा निकले और अन्त आपकी सुरत माया-बन्धन से रहित होकर शान से उस विमान पर चढ़कर सच्चे घर जाए, यह अब आपके अपने हाथ में है। चाहो तो इस परिणाम को प्राप्त कर लो और चाहो तो बन्धनमान होकर कीड़ी से लेकर हाथी तक व ब्रह्मा से लेकर तृण तक कर्मानुसार किसी अन्य शरीर में चले जाओ। अब यह आपका अपना निश्चय है। इस सन्दर्भ में हम तो यही कहेंगे कि अपना अन्त परिणाम अच्छा व उद्धारक प्राप्त करो। निःसन्देह इस हेतु शास्त्र-विहित वचन प्रवान कर अपने, अपने बच्चों के व समाज के सुधारक बनना होगा। अतः अपने आप को सुधारो ताकि कलुकाल के कलुषित वातावरण का प्रभाव आपको किसी प्रकार से भी न घेर पाए। जानो ऐसा करने से जीवन-पथ सुगम हो जाएगा और सुरत उस विमान पर चढ़कर अपने

सच्चे घर प्रस्थान करेगी। जानो सुरत का उस विमान पर चढ़कर जाना अपने आप में अजरता-अमरता का प्रतीक होता है। ऐसी सुरत ही एकरूप होकर परमात्मा नाम कहाती है। इसके विपरीत यदि आपका श्वास शरीरस्थ नौ द्वारों में से किसी भी द्वार से निकलता है तो यह अति अज्ञानमय दुःखद अवस्था को प्राप्त होने की बात होती है। हम समझते हैं कि कोई भी ऐसा दुःख कभी नहीं खरीद करना चाहेगा। याद रखो जो दुःख खरीद करता है वह मूर्ख आत्मघाती होता है। सो सजनों ऐसे आत्मघाती मत बनो। इस हेतु शास्त्र विहित विचारों का खुद मनन-चिन्तन व विवेचन करके अमल कमाओ, साथ ही अन्यों को भी इस विषय में बताओ। याद रखो खुद बताओगे तो स्मृति में रहेगा। स्मृति में रहेगा तो जब गलती करने लगोगे, उसी क्षण सम्भल जाओगे। ऐसा ही हो इस हेतु अपने सजन बन जाओ, वैरी मत बनो और समस्त द्वि-द्वेष, मोह-ममता छोड़ दो। याद रखो अपने घर वालों के प्रति या चीज़ों के प्रति मोह हुआ तो आप दुःखों को प्राप्त होंगे ही होंगे। यही मैं-मेरा का भाव इन्सान की होश-हवाश भुला देता है। ऐसा होने पर बुद्धि मनुराज के अधीन हो गोते खाती है और इन्सान तीनों तापो से ग्रस्त होकर अवाज़ार हो जाता है। अब आगे ध्यान से सुनोः-

(महाबीर जी के मुख के शब्द)

श्री रामचन्द्र जी दियां हकलां देखो कैसियां ही ओ आवन जी।

हां हां हकलाँ ओ मारन तरहां तरहां दियां कैसियां ही ओ सुहावन जी।।

गरुड़ ते सवार होके पहुंचे विच दरबार जी।

सांवले दे चरणां दे नाल कैसा है ओ प्यार जी।

करन ओ चरण बन्दना, करन ओ चरण बन्दना।।

चरण बन्दना अनेक बार बन्दना, संहसर बार करन नमस्कार।

करन ओ चरण बन्दना, करन ओ चरण बन्दना।।

राज राजेश्वर जनार्दन प्यारे जगदीश्वर परमेश्वर नाम तुम्हारे।

करन ओ चरण बन्दना, करन ओ चरण बन्दना।।

चरण बन्दना अनेक बार बन्दना, संहसर बार करन नमस्कार।

करन ओ चरण बन्दना, करन ओ चरण बन्दना।।

राघव राघवेन्द्र परमात्मा हमारा, नर नारायण ईश्वर तेरा सहारा।

करन ओ चरण बन्दना, करन ओ चरण बन्दना।।

चरण बन्दना अनेक बार बन्दना, संहसर बार करन नमस्कार।

करन ओ चरण बन्दना, करन ओ चरण बन्दना।।

राम रहीम कृष्ण अवतारे दस पातशाह आये कलुकाल विच सारे।

करन ओ चरण बन्दना, करन ओ चरण बन्दना।।

चरण बन्दना अनेक बार बन्दना, संहसर बार करन नमस्कार।

करन ओ चरण बन्दना, करन ओ चरण बन्दना।।

संहसर हिन तेरे नाम जगत विच कई विरले ही तैं तारे।

विरले सजन कई जीवन बना गये, कई अमर हो गये सारे।

करन ओ चरण बन्दना, करन ओ चरण बन्दना।।

चरण बन्दना अनेक बार बन्दना, संहसर बार करन नमस्कार।

करन ओ चरण बन्दना, करन ओ चरण बन्दना।।

सजनों यदि ऊपर वर्णित सारी बातचीत सुनकर व उस पर विचार करके अपने सजन बन वैसा ही पुरुषार्थ दिखाने का निश्चय लिया है तो इस कीर्तन के अन्तर्गत परमेश्वर जो कह रहे हैं, वह आपको समझ आ जाना चाहिए था। फिर भी आपकी जानकारी के लिए परमेश्वर सबको सुचेत करते हुए कह रहे हैं कि परमेश्वर की वाणी कोई विरला ही धारण कर व्यवहार में लाने का पुरुषार्थ दिखाता है। वह विरला वो होता है जो मोह-माया से आज़ाद होकर कामनामुक्त जीवन जीने में सफल हो पाता है। इसीलिए तो कलुकाल की हालत देखते हुए इस कीर्तन के अन्तर्गत हमें वह समझा रहे हैं कि कोई विरला ही कुदरत के समय अनुकूल आवाहन को समझकर भाव-स्वभाव परिवर्तन करने का पुरुषार्थ दिखा पाता है यानि शारीरिक भाव-स्वभाव छोड़कर आत्मीयता के भाव अपनाने का साहस दिखा, अपना जीवन बर्बादी की तरफ से मोड़कर पुनः आबाद करने में सफल हो पाता है। सो भाव-स्वभाव परिवर्तन करने का यह एक सुनहरी मौका है, अतः इसे हाथ से मत जाने देना। इस सन्दर्भ में हम मानते हैं कि आज संसार में ज्ञान प्रदान करने की जो व्यवस्था है, वह अपने आप में परिपूर्ण नहीं है अपितु भ्रम है। इसी कारण हर मानव मानसिक तौर पर बीमार है, विवेकहीन है यानि मानव होते हुए भी वह अपनी विशेष शक्ति को समझ नहीं पा रहा और न ही उसका प्रयोग कर अपने जीवन उद्धार के प्रति यत्नशील हो पा रहा है। इसका मतलब यह है कि जहाँ विवेकहीनता होती है वहाँ शक्ति पास होते हुए भी इन्सान उसका प्रयोग करने में सक्षम नहीं हो पाता। इस तरह वह अपना ही वैरी सिद्ध होता है क्योंकि वह अपनी शक्ति को जानने-पहचानने के प्रति ध्यान ही नहीं दे पाता। उसका ध्यान तो जगत के प्रपंचों में ही उलझा रहता है यानि वह हर वक्त जगत को ही सोचता रहता है। सजनों यह एक अजीब प्रकार का मानसिक रोग होता है। यही मानसिक रोग तीनों तापों से ग्रसित होने का कारण बनता है यानि तब न तो हम भौतिक तौर पर प्रवीण हो पाते हैं, न ही आध्यात्मिक तौर पर और न ही दैविक तौर पर। इसीलिए तो हम किसी के भी पीछे चल पड़ते हैं और पराश्रित होकर उनका प्रभुत्व स्वीकार बैठते हैं। यहाँ हम यह नहीं समझते कि वह हम अज्ञानियों को सीधे रास्ते पर चला नहीं रहा अपितु छल करके भटका रहा है

ताकि उसका आधिपत्य बना रहे। याद रखो ऐसे व्यक्ति कभी भी मानव को सत्यज्ञान प्रदान नहीं करते क्योंकि वे नहीं चाहते कि कोई हमारे बराबर आकर खड़ा हो जाए। यदि ऐसा होता है तो कहीं न कहीं उनकी प्रतिष्ठा पर प्रश्न खड़ा हो जाने की बात होती है जो वे होने नहीं देना चाहते। सो अपने साथ ऐसा कभी मत होने देना यानि देखा-देखी कभी भी ऐसी भूल मत करना। हम देखते हैं कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के बावज़ूद भी कई सजन ऐसी भूल कर रहे हैं। यह हम खुलकर कह रहे हैं ताकि जिन्होंने आपको अपने छलावे में फँसाकर भ्रमित कर रखा है आप उस जँजाल को तोड़कर आज़ाद हो जाओ। निःसन्देह इस हेतु आपको सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अनुसार चौबीस घण्टे अपना ख्याल-ध्यान आद् अक्षर के संग घड़ी की टक-टक की तरह जोड़ उसके नाद को सुनने का प्रयास करना होगा। जानो यदि एक बार उस नाद का रस पड़ गया तो फिर उस नाद के ज़रिये ईश्वर यानि प्राणदाता आपको क्या सौगात दे रहे हैं, उसकी समझ आ जाएगी। फिर इस वृत्ति को साधे रखना आपको बहुत अच्छा लगेगा क्योंकि वह आनन्द प्रदायक होगा और उससे परमानन्द की प्राप्ति हो जाएगी। आप देख ही रहे हो कि दुनियाँ की हालत कितनी बिगड़ी पड़ी है, तभी तो शास्त्र कह रहा हैः-

दुनियां वाले इन्सान बिगड़ गये बिगड़ गई प्रजा ओ सारी

बिगड़ गया दुनियां दा राजा, बिगड़े ओ खलकत सारी

आशय यह है कि दुनियाँ के शासक-प्रशासक हर मानव को परमार्थी ज्ञान प्रदान करने के प्रति ध्यान ही नहीं दे रहे। ऐसे में जिन पर वे शासन करते हैं उनका सुधार व उद्धार कैसे होगा? यह गुनाह है और इसी कारण असंख्य जीवन बर्बाद हो रहे हैं। सजनों अब युग परिवर्तन की कगार पर खड़ा है अतः वैश्विक-स्तर पर हर शासक-प्रशासक के लिए बनता है इससे पहले कि सब विध्वंस हो जाए, वे जागृति में आ जाएँ और समभाव समदृष्टि की युक्ति अनुसार कुल विश्व में शासन कायम कर दें ताकि हर मानव द्वि-द्वेष का दुर्भाव मिटाकर सजनता के भाव का जागरण कर सके। याद रखो यदि हर शासक-प्रशासक ने ऐसा कर दिखलाया तो

सजन, सजन का गहना हो जाएगा क्योंकि चहुँ ओर निष्कामता का वातावरण पनप जाएगा। आशय यह है कि तब हर मानव कामनामुक्त होकर आत्मज्ञान के वर्त-वर्ताव में परिपक्व हो जाएगा और निर्विकारिता से जीवन जी पाएगा। इस तरह सबके अन्दर एकरूपता का भाव पनपेगा और हर मानव समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार 'एक ख़्याल एक दृष्टि, एक दृष्टि एक दर्शन' में ध्यान स्थित हो जाएगा। ऐसे में आप ही बताओ कि दूसरा कौन रहेगा जिससे लड़ाई-झगड़ा या वैर-विरोध होगा ? जब ऐसा बराबरी का भाव हो गया तो कौन किस पर शासन करेगा ? शासन तो वही कर सकता है जिसकी जोत हर जीव में प्रकाशित है। जब जीव इस आद् जोत को पहचान जाएगा तो सतवस्तु का राज स्थापित हो जाएगा और हर जीव निष्पाप जीवन जीने वाला धर्मपरायण इन्सान बन जाएगा। इस तरह ईश्वर का एकछत्र शासन स्थापित हो जाएगा और खण्ड-खण्ड हुआ यह भारत एक भू-खण्ड बन जाएगा। अगर कोई भी शासक-प्रशासक हमारी बात सुन रहे हों तो हमारी प्रार्थना को स्वीकार करो। जानो यह प्रार्थना कुदरत की तरफ से है अतः कुदरत की बात पर विचार करो और होश में आ जाओ। हम मानते हैं कि यह बहुत बड़ा त्याग है। इस त्याग हेतु आपको प्रभुत्व जमाने के स्थान पर सेवाभाव में आना होगा और अपनी अहंकार प्रवृत्ति छोड़नी होगी। याद रखो अहंकार प्रवृत्ति वैसे भी विनाशक होती है क्योंकि अहंकार इन्सान की शारीरिक-मानसिक स्वस्थता को खा जाता है अतः इस प्रवृत्ति को कभी मत अपनाना।

सजनों सब ऐसा करने में कामयाब हों इसलिए तो समभाव-समदृष्टि के स्कूल से सजनता का भाव अपनाने का आवाहन दिया जा रहा है। यहाँ यह भी जानो कि जिस कुदरत ने इन्सान की बनत बनाई है उस बनत बनाने वाले कारीगर का कहना मानना तो हर इन्सान के लिए बनता है और इसी में सजनों सबका लाभ है। इस लाभ के दृष्टिगत कोई कुछ भी कहे, उसके जाल में मत फँसो। जानो यही कुदरत का हुक्म है। इस हुक्म की प्रवानगी कर अपनी शक्ति को पहचानो। जानो आत्म-शक्ति मेरी अपनी शक्ति है। मैं इसी शक्ति के अधीन हूँ और इसी के

द्वारा 'मैं ब्रह्म हूँ' मुझे इस यथार्थता की समझ आ सकती है और मेरा उद्धार हो सकता है। अब आप विचार लो क्योंकि यह मौका फिर जीवन में नहीं आएगा। विचारो कि आपको नरकों में जाना है या परमधाम पहुँच विश्राम को पाना है? एक तरफ नरक है और दूसरी तरफ मोक्ष, क्या चाहते हो?

'मोक्ष'।

तो फिर युक्तिसंगत विचारयुक्त मार्ग पर चलना होगा और युक्तिसंगत ही सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित सत्यज्ञान का नित्य प्रति चिन्तन-मनन करना होगा ताकि सजनता के प्रतीक बन सको। याद रखो ऐसा करने पर ही समभाव नज़रों में हो सकेगा और आप समदृष्टि हो जाओगे। सजनों आज कुदरत ने आपको मुकम्मल बात बता दी है अतः इस पर अच्छे से विचार करना क्योंकि आज का समय फिर नहीं आएगा। यह समय निकल गया तो फिर पछताओगे। अब यदि परमधाम पहुँच विश्राम को पाने का निश्चय लिया है तो उस निश्चय पर मज़बूत बने रहने के लिए दिल से बोलनाः-

ठान लिया तो रुकना क्या

हम आगे बढ़ेंगे हम आगे बढ़ेंगे

और आगे बढ़ कर

श्रेष्ठ मानव बन जाएंगे

भौतिक ज्ञान के संग संग

आत्मिक ज्ञान भी प्राप्त करेंगे

जो शब्द विचार निहित हैं उसमें
उनको धारण कर नेक बनेंगे

ए विधु जो अंधकार है मन में
वह स्वतः ही मिट जाएगा
सद्ज्ञान की वर्षा होने पर
मन का मैल धुल जाएगा

फिर न कोई विषय रहेगा
जिसे इन्द्रियाँ ग्रहण करेंगी
तो ही तो भोग विलास की पीड़ा
हमें नहीं सहनी पड़ेगी

तभी तो दोष मुक्त हम रहकर
विकार रहित रह पाएंगे
निर्विकारी नाम कहा कर
जीवन सफल बनाएंगे

सजनों यदि दिल से श्रेष्ठ मानव बनना चाहते हो तो अपनी सोच, बात-चीत के तरीके और कर्म पर पकड़ रखनी होगी ताकि कहीं भी, कुछ भी, किसी प्रकार से भी कोई हमें कामनायुक्त न बना सके और हम जो भी सोचें, बोलें व करें वह निष्कामता का प्रतीक हो। जानो यदि ऐसा करने में समर्थ हो गये तो हृदय साफ हो जाएगा और अपना आप प्रकाश निगाह आ जाएगा। इस प्रकाश में फिर अपना आलौकिक स्वरूप निगाह आएगा। सजनों यह सर्वोच्च प्राप्ति है जिस पर आम आदमी दृष्टिपात नहीं कर सकता। कोई विरला ही जो अपना ख़्याल-ध्यान उस प्रकाश में जोड़ता है वह ही अपने यथार्थ परमात्म ब्रह्म स्वरूप को पहचान ब्रह्ममय होकर इस जगत में निर्लिप्तता से विचर पाता है। इस तरह वह कर्ता होते हुए भी अकर्ता भाव में स्थित रह जगत से आज़ाद हो निर्विकारी नाम कहाता है। अब यहाँ आप ही बताओ कि निर्विकारी कौन है?

'भगवान'

ठीक कहा। यही हमारा, आपका, सबका यथार्थ है। इस यथार्थ को जानना, मानना और तद्नुकूल ही आचार व्यवहार जगत उद्धार के निमित्त समर्पित भाव से करने में सक्षम बनना। ऐसा इन्सान अपने आप को आत्म-तृप्त समझता है। उसके हृदय में यह भाव टिका होता है कि मेरे पास सब कुछ है और इसीलिए वह सबको उदार दिल से देता है। जो भी निर्जीव अपने रास्ते से भटका हुआ उसे दिखाई देता है व जिसे पूरी रूहानी खुराक नहीं मिलती, उसे वह ज्ञान देता है ताकि वह चेतन हो उठे और सर्वहितकारी बनकर सबका भला करे। सो सजनों आपको भी ऐसा ही बनना है और इसके लिए अपनी योग्यता को निखारना है व अपने घर को सँवारना है ताकि जीवन आत्मरस से परिपूर्ण हो जाए और आप ओजस्वी व तेजस्वी बन निर्भय-निर्वैर हो जाओ। अब जो निर्भय और निर्वैर है वह हकूमत की कुर्सी पर विराजमान होता है। जैसा कि कहा भी गया हैः-

सच नू धारण करके जेहड़ा सच कमावे बेखौफा, बेख़तरा, बेडर ओ हो जावे

निर्भय, निर्वैर ओन्हु मिले त्रिलोकी दी कुर्सी

सजनों आपको भी इस पद को प्राप्त करने के योग्य अधिकारी बनना है। इस हेतु जो शास्त्र सुनने व पढने की विधि है, उसी अनुसार अफुर होकर पढ़ना व समझना है ताकि जो पढ़ो उसे धारण कर सको। जानो ऐसा करना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि सुना हुआ तो यहीं रह जाता है परन्तु धारण किया हुआ सदा साथ यानि स्मृति में रहता है और वर्त-वर्ताव में आता है। अतः शास्त्र पढ़ते-समझते समय खुद पर नियन्त्रण रखो और अफुर बने रहो ताकि वचनों को खुद धारणकर अपने परिवारजनों व समाज तक पहुँचा सको जिससे हर जगह शन्तिमय वातावरण बना रह सके। सजनों यदि ऐसा कर लिया तो यकीन मानो फिर जीवन में रोने का दिन कभी नहीं आएगा और सदा खुश रहोगे। ऐसा ही हो इस हेतु सदा अपने ख़्याल पर सतर्क रहो यानि पहरा दो ताकि सुरत सदा जागती रहे। अब ऐसे ही शास्त्र पढ़ोः-

(सजन श्री हनुमान जी के मुख दे शब्द)

भारे वाले कुएं उत्ते लगा बग़ीचा, कैसा सुन्दर ओ मान।

भारे वाले कुएं उत्ते लगा बग़ीचा, कैसा सुन्दर ओ मान।।

अम्ब अनार कचनाल दे बूटे, साडा प्रगटे लाल महान।

साधना करो ते लावो ध्यान, रस्ता पकड़ो निष्काम।।

फुरने दी माता चावल जी, फुरने दा पिता बुधराम।

कैसी सुन्दर ओ नगरी, कैसा है ओ ग्राम।।

ओथे प्रगटे आप भगवान, रस्ता पकड़ो निष्काम।

रस्ता पकड़ो निष्काम, रस्ता पकड़ो निष्काम।।

न रहेगी ग़रुरी, न रहेगी मग़रुरी,

रस्ता पकड़ो निष्काम, रस्ता पकड़ो निष्काम।

श्री रामचन्द्र दयालु जी नूं देखो, कई प्यारे तारदे।

जेहड़े बिगड़े होये ने जगत ते, ओन्हां नूं वी तरना सिखालदे।

रस्ता पकड़ो निष्काम, रस्ता पकड़ो निष्काम।

कर्म काण्ड करो कई कई साधना, न पाये मन विश्राम।

पकड़ो रस्ता निष्काम, पकड़ो रस्ता निष्काम।

किसे तरह करिये साधना, किसे तरह तरह दा ध्यान।

रस्ता पकड़ो निष्काम, रस्ता पकड़ो निष्काम।

रंग पुर वासी ओ,

सर्व निवासी ओ।

सजनों अभी जो आपने सुना उसमें मुख्य बात है 'रस्ता पकड़ो निष्काम' सो इस हफ्ते सब अपने ख़्याल को निष्कामता में इस तरह साधना कि मन-वचन-कर्म में निन्दा-उस्तत, वैर-विरोध, तेरी-मेरी का भाव उत्पन्न न हो। इनसे अपने ख़्याल को सदा आज़ाद रखना क्योंकि आपने अभी निष्काम पथ पर स्थिर होने का दृढ़-संकल्प लिया है। यदि एक हफ्ता आपने ऐसे कर लिया यानि अपने आप को साध लिया तो आपको बहुत अच्छा लगेगा क्योंकि अन्तर्मन में शान्ति का एहसास होगा। जब एहसास होगा तो यही निष्कामता का भाव फिर प्रिय लगेगा। जब प्रिय लगेगा तो ऐसा करना अच्छा लगेगा और निष्कामता आपके भाव के माध्यम से भावना में उतरेगी। भावना में उतर गई तो फिर तद्नुरूप ही अन्तर व बाह्य जगत नज़र आएगा। इस तरह इतने से प्रयत्न से आपकी भावना व स्वभाव शुद्ध हो जाएगा

और आपके अन्दर सजनता का भाव प्रस्फुटित हो जाएगा। फिर आपके कुल परिवार व समाज में एक अवस्था आ जाएगी। जानो यही जीवन की यथार्थता है। इसी यथार्थता को जानो और अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम को पाओ।

आप ऐसा करने में कामयाब हों,इन्हीं शुभ कामनाओं सहित।